प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का राष्ट्र के नाम संदेश

दिनांक : 28–7–79
समय : 20.15

दोस्तो,

मैं आज आपसे राष्ट्र के प्रथम सेवक होने के नाते बातचीत कर रहा हूँ। आज ही मैंने और मेरे कुछ साथियों ने देश का कामकाज चलाने की जिम्मेदारी सम्भाली है। जनता से हमें जो सद्भावना और प्यार मिला है, उसका हमें पूरा अहसास है। हम सबकी यही कोशिश होगी कि यह पवित्र जिम्मेदारी हम पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निभायें।

हम सब लोग इस बात से वाकिफ हैं कि हमारे नेताओं के नेक इरादों के बावजूद हर क्षेत्र में कामयाबियां उतनी नहीं मिलीं जितनी कि जनता हमसे उम्मीद करती थी। आजादी के 30 साल बाद भी हम दुनिया के सबस गरीब देशों में से एक हैं।

हमें गरीबी हटानी होगी और हर नागरिक के लिए बुनियादी जरूरत की चीजें सुलभ करनी होंगी। हमारे देश के राजनीतिक नेताओं को यह याद रखना चाहिए कि हमारे लोगों को जीवन के लिए जो संघर्ष करना पड़ता है, उसके सामने हमारे आदश और हमारे सभी सपने मजाक की तरह लगते हैं। भूख से तड़पते बच्चे की ऑखों को देखकर दिल दहल जाना स्वाभाविक ही है। इसलिए हमारे राजनीतिक नेताओं का यह कर्तव्य होना चाहिए कि ऐसी व्यवस्था हो, जिससे कि कोई बच्चा भूखा न सोये और कोई परिवार अगले दिन की रोजी–रोटी की चिन्ता में रातभर कुलबुलाता न रहे। हमें ऐसी भी व्यवस्था करनी होगी कि किसी भी नागरिक की क्षमता केवल इस बजह से नष्ट न हो जाए कि उसे पोषक तत्व नहीं मिला था।

बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। आजकल नौजवानों के लिए इससे बढ़कर और क्या तकलीफदह बात हो सकती है कि वे डिग्रियों के बावजूद रोजगार प्राप्त न कर सकें और उन्हें काम–धंधा न मिले। हमें सभी के लिए रोजगार सुलभ करना है। दरअसल रोजगार देना ऐसा प्रमुख साधन बनना चाहिए जो गरीबी को दूर करने में सहायक हो सके। इसलिए मेरी नीतियों में सबस ज्यादा तरजीह बेरोजगारी को मिटाने के लिए होगी।

हमारे जैसे देश में जहां आर्थिक और सामाजिक समस्याएं जटिल हैं, इसके अलावा कोई रास्ता नहीं कि हम उद्योग और कृषि– दोनों पेशों में छोटी–छोटी आर्थिक इकाइयों की स्थापना को बढ़ावा दें। इसका मतलब यह नहीं है कि मेरी सरकार को सिद्धांत रूप में बड़े उद्योगों की भूमिका के बारे में कोई संकोच है, नहीं ऐसा नहीं है। जहां भी जरूरी होगा और राष्ट्रहित का तकाजा होगा सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े उद्योगों की स्थापना जारी रहेगी। यही नही, विशेष परिस्थितियों में वतमान निजी उद्योगों का भी राष्ट्रीयकरण किया जायेगा।

इसके साथ ही हमारी सरकार यह महसूस करती है कि भ्रष्टाचार की शुरूआत ऊपर से होती है और वह धीरे–धीरे नीचे आता है और फिर सम्पूर्ण समाज को भ्रष्ट कर देता है। जब तक हमारे देश के सार्वजनिक जीवन में उच्चतम पदों पर पूरी ईमानदारी नहीं होगी तब तक प्रशासन में से भ्रष्टाचार को न तो पूरी तरह मिटाया जा सकता है न ही उसे काफी हद तक कम किया जा सकता है। हालांकि अंतिम समाधान लोगों के हाथों में ही है जो अपने नेताओं को चुनने का अधिकार रखते हैं फिर भी मेरो सरकार इस सम्बंध में सभी जरूरी कदम उठायेंगी।

कुछ निहित स्वार्थी तत्व मेरे और मेरे साथियों के बारे में तरह–तरह की अफवाहें फैला रहे हैं। ये अफवाहें अनिच्छुक लोगों पर हिन्दी लादने और अल्पसंख्यकों तथा हमारे समाज के कमजोर वर्गों के प्रति न्याय न होने देन के बारे में है। इस तरह का प्रचार बिल्कुल झूठा है और सत्य से परे है।

हमारी सरकार सभी पिछड़ी जातियों, कमजोर वर्गों, अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों और आदिम जातियों को पूरा संरक्षण देगी और उन्हें विकास करने का पूरा–पूरा अवसर देगी, जिससे कि वे समाज में अपनी भूमिका निभा सकें।

सरकार अल्पसंख्यकों को आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अधिक से अधिक मौका देगी और उन्हें भारतीय समाज की धारा में मिलाने के लिए भरपूर कोशिश करेगी।

प्रत्येक भाषा को उसके विकास के लिए पूरा–पूरा अवसर मिलेगा। कोई भाषा किसी ऐसे वर्ग पर नहीं थोपी जायेगी जो उसके खिलाफ हो। हालांकि सरकार को यह आशा है कि समय बीतने के साथ एक ऐसी सामान्य भाषा का विकास हो जायेगा जो सभी को मान्य होगी।

आज देश गम्भीर संकट के दौर से गुजर रहा है। यह कोई साधारण समय नहीं है। हमारे लोगों की उम्मीदें टूटती जा रही हैं। इसलिए इस नाजुक घड़ी में हमारा पहला काम यह होगा कि नई सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में हम लोगों का विश्वास फिर से पैदा करें और उसे मजबूत बनायें।

बढ़ती हुई कीमतों के कारण हमारे लोगों को आर्थिक परेशानी का अहसास हो रहा है। मैं जनता को विश्वास दिलाना चाहता हॅू कि सरकार स्थिति से निपटने के लिए हर सम्भव कदम उठायेगी। हमारे पास सरकारी गोदामों मैं काफी अनाज है और विदेशी मुद्रा का काफी भण्डार है, जिससे हमें किसी भी स्थिति का मुकाबला करना मुमकिन होगा। कोयला, बिजली, इस्पात और सीमेंट के उत्पादन, रेलों के आने–जाने में रुकावट, बन्दरगाहों से बन्दरगाहों से माल के उठाने, औद्योगिक सम्बंधों में बिगाड़ जैसी समस्याओं को हल करने के लिए सहानुभूति के साथ लेकिन कड़ाई से कार्यवाही की जायेगी।

कानून और व्यवस्था की आम स्थिति चिन्ताजनक हो रही है। लोगों में असंतोष की भावना फैल रही है, जिसे रोकना ही होगा।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमें लोगों के मन में लोकतांत्रिक व्यवस्था की क्षमता और विभिन्न समस्याओं को हल कर सकने की सहूलियत के बारे में फिर से विश्वास जगाना होगा। आजकल देश में अनिश्चितता, आशंका और निराशा का जो माहौल बना हुआ है, उसकी जगह विश्वास और आशा का नया वातावरण बनाना होगा।

सैद्धांतिक मतभेद पलक झपकते दूर नहीं हो सकते किन्तु राष्ट्र के लक्ष्यों और आदर्शों पर आधारित एकता न केवल सम्भव है बल्कि हमारे समय की बहुत बड़ी जरूरत भी है।

राष्ट्रों के समुदाय में भारत गौरवशाली परम्पराओं के अनुरूप भूमिका निभायेगा। उसे सभी जगह शांति का संदेश फैलाना है और जहां कहीं दुख–तकलीफें हैं उन्हें दूर करने की कोशिश करनी है।

विदेशी मामलों के बारे में मेरी सरकार गुटनिरपेक्षता की नीति पर चलती रहेगी लेकिन किसी भी बड़ी ताकत की तरफ नहीं झुकेगी।

भारत को कुदरत ने बहुत कुछ दिया है और यहां के लोगों के पास महान संस्कृति की धरोहर है और उनमें बड़ी तथा लगातार मेहनत करने की भी क्षमता है। मेरा यह परम कर्तव्य होगा कि समान रूप से देश के सभी निवासियों की ज्यादा से ज्यादा सेवा कर सकूं और देश की नैतिक तथा आर्थिक शक्ति को बढ़ाने और जीवन को उन्नत करने के लिए भरपूर प्रयास करूँ।

जयहिन्द ।

————————0000000————————